Research Chronicler, International Multidisciplinary Refereed Peer Reviewed Indexed Research Journal
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

उत्तराखंड की लोक कला ऐपण को उभारते महिला कलाकार

रोशन कुमार

सहायक प्राध्यापक

श्री गुरु नानक देव पी.जी. कॉलेज, नानकमत्ता (उधम सिंह नगर,उत्तराखंड),

सारांश

देवभूमि के नाम से विख्यात उत्तराखंड जोकि अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर अनेक जाति एवं जनजाति के लोग निवास करते हैं तथा इन जाति एवं जनजातियों की संस्कृतियों में अनेक भिन्नता है। भिन्नता होने के बावजूद भी यहां पर प्राचीन काल से एक लोक कला जो ऐपण नाम से विख्यात है पूरे उत्तराखंड में प्रसिद्ध है। ऐपण मुख्यता घर के दरवाजों जमीन एवं देवताओं की चौकी के लिए बनाए जाते हैं। आजकल आधुनिकता के इस दौर में ऐपण को बनाने के लिए सिंथेटिक पेंट, एक्रेलिक पेंट आदि का इस्तेमाल भी होने लगा है। ऐपण को मुख्यता महिलाओं के द्वारा बनाया जाता है। उत्तराखंड की कुछ महिला कलाकारों ने ऐपण को नए आयाम देकर देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी इसको ख्याति दिलाने का काम किया है। आधुनिकता के साथ ही सही लेकिन आज भी हम अपनी लोक कला से जुड़े हुए हैं, क्योंकि कलाकारों द्वारा ऐपण को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जा रहा है। जिसके कारण यह कला आज भी हमारे समाज में हमारे समक्ष व्याप्त हैं।

मुख्य बिंदु- ऐपण, कलाकार, लोक कला

प्रस्तावना

देवभूमि के नाम से विख्यात उत्तराखंड जिसका गठन देश के 27 वें राज्य के रूप में 9 नवंबर 2000 को हुआ। उत्तराखंड में 13 जिले और दो मंडल जिनमें कुमाऊं और गढ़वाल मंडल है। यह भारत के उत्तरी भाग में हिमालय की गोद में बसा है। उत्तराखंड को आज अल्मोड़ा एवं इसके आसपास तथा चमोली जिले में प्रागैतिहासिक गुफा चित्र प्राप्त होने का गौरव भी प्राप्त होता।

जिस प्रकार भारत में मुगल कला को ईरान व भारतीय चित्रकला के मिश्रण से विकसित हुआ माना जाता है, उसी प्रकार मुगल दरबार से गढ़वाल आए चित्रकारों तथा उत्तराखंड में श्रीनगर के स्थानीय कलाकारों की सहायता से गढ़वाल चित्रकला शैली का विकास माना जाता है। सुलेमान शिकोह, जो शाहजहां के पुत्र दारा शिकोह का पुत्र था, ने गढ़वाल में शरण ली थी।दारा शिकोह के साथ सन 1658

ईसवी के दरबार के दो चितेरे शामदास और उसका पुत्र हरदास भी गढ़वाल पहुंचे थे।कहा जाता है, कि इन्हीं कलाकारों से गढ़वाल में कला का आरंभ देखा जा सकता है। 18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 19वीं शताब्दी के मध्य गढ़वाल में सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरातल के उन्नत व्यवस्था का श्रेय प्रसिद्ध चित्रकार, साहित्यकार और इतिहासकार मौलाराम को दिया जाता है।

ऐपण

मानव विकास के साथ यहां की चित्रकला लोक कलाओं के द्वारा भी भिन्न-भिन्नमाध्यमों से चित्रित हुई है। प्रागैतिहासिक काल से जैसे-जैसे मानव का विकास हुआ यहां की चित्रकला लोक कलाओं के रूप में विकसित हुई। जैसे उत्तराखंड की लोककला ऐपण जोकि, सदियों से आज तक प्रत्येक शुभ अवसरोंव अनुष्ठानों में बनाया जाता है। जैसे-शादी, जनेऊ, नामकरण और त्योहारों के अवसर पर यहां के लोग अपने घरों को इसी लोक कला से सजाया करते हैं। आसान से दिखने वाले इस लोक कला में ग्रहों स्थिति और धार्मिक अनुष्ठानों का खास ध्यान रखा जाता है। ऐपण को फर्श, दीवारों और घरों के प्रवेश द्वार व पूजा घर में बनाया जाता है। इन डिजाइनों का उपयोग लकड़ी की चौकी (देवताओं के लिए पूजा आसन)को सजाने के लिए किया जाता है। जैसे लक्ष्मी चौकी, आचार्य चौकी, नवदुर्गा चौकी आदि अनेक प्रकार की चौकियां बनाई जाती है। पारंपरिक रूप से ऐपण को बनाने के लिए गेरू (जो कि एक सिंदूर रंग की मिट्टी है) से इसका आधार बनाया जाता है। तथा गेरुआ रंग के धरातल पर बिस्वार (रात भर पानी में भीगे चावल का घोल)से डिजाइन तैयार किया जाता है। डिजाइन बनाने के लिए दाहिने हाथ की तीन उंगलियों का उपयोग किया जाता है। ऐपण को महिलाओं के द्वारा बनाया जाता है तथा ऐपण माता अपनी पुत्री को बनाना सिखाती है। ऐपण में विभिन्न प्रकार के ज्यामितीय आकारों शंख, पुष्प,सूर्य,चंद्रमा, लक्ष्मी-चरण,स्वास्तिक, त्रिशूल आदि धार्मिक चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।

आजकल ऐपण बनाने के लिए सिंथेटिक इनेमल पेंट व एक्रेलिक पेंट का इस्तेमाल किया जाने लगा है। आज के इस आधुनिकता के दौर में जहां सभी लोग पश्चिमी सभ्यता व अलग-अलग सभ्यताओं को अपना रहे हैं, वहीं उत्तराखंड के कुछ महिला लोक कलाकार ऐपण को देश एवं विदेशों में भी प्रसिद्धि दिला रहे हैं।

उत्तराखंड के कलाकार

अल्मोड़ा निवासी'नमिता तिवारी' जो एक प्रमुख पुरस्कृत ऐपण कलाकार है और इस पारंपरिक कुमाऊनी कला को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रही हैं। 2015

में इन्होंने 'चेली ऐपण' नाम से एक एन.जी.ओ. की स्थापना की, जो इस कला को सीखने के महत्व को समझाने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करती हैं। ऐपण डिजाइन से यह साड़ी बॉर्डर ,वास कट,सूट, पेन होल्डर और कप आदि को डिजाइन करती हैं।

'विमला शाह' भी एक ऐपण कलाकार के रूप में जानी जाती हैं जो नैनीताल, उत्तराखंड की रहने वाली है। शादी के उपरांत अपनी भाभी के कहने पर इन्होंने नैनीताल में "नेहरू ट्रस्ट" नामक एक एन.जी.ओ. आरंभ किया। जिस एन.जी.ओ. में परंपरागत कला पर ध्यान दिया गया। विमला शाह को पहला आर्डर तत्कालीन नैनीताल के जिला प्रबंधक आराधना शुक्ला से मिला। जिनके लिए उन्होंने 'ज्योति पटका' बनाया और इसके लिए उन्हें 50 पैसे मिले इसके बाद उन्हें भारत के उच्च न्यायालय से 80 ऐपण 5 दिन में बनाने का ऑर्डर मिला। ऐपण लोककला को सीखने के संदर्भ में वह कहती हैं,"जब मैं छोटी थी तब मैं ज्योति पटका व ऐपण बनाने में अपनी मां की मदद किया करती थी। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने शाह को उत्तराखंड के लोक कला को संरक्षित रखने में अपने अपार योगदान के लिए सम्मानित किया और तब से लेकर अब तक वह ऐपण में काम कर रही है।

'सविता जोशी' भी एक ऐपण कलाकार के रूप में विख्यात 35 वर्षीय महिला है। मूल रूप से यह हल्द्वानी नैनीताल के रहने वाली हैं लेकिन वर्तमान में यह अपने परिवार के साथ गुरुग्राम में रहती हैं सविता ने ऐपण कला को अपनी दादी मां और मां से सीखा और आज वह एक जानी-मानी ऐपण कलाकार है। जिनके नाम पर लगभग 15 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय शोध पत्र प्रकाशितहो चुके हैं।

मीनाक्षी खाती जो ऐपण गर्ल के नाम से ख्याति पा रही है। यह ऐपण को नए आयाम देने का काम कर रही हैं। इन्होंने भी ऐपण को बनाना अपनी दादी से सीखा था मीनाक्षी खाती रामनगर की रहने वाली हैं। तथा वह ऐपण डिजाइन का नया-नया प्रयोग कर लोगों में इसकी लोकप्रियता को बढ़ावा देने का काम कर रही है। यह ऐपण के डिजाइन को नेम प्लेट,पॉट, राखी एवं और भी अनेक चीजों पर बनाती है। जिसके कारण उन्हें बहुत प्रशंसा मिल रही है। हाल ही में उन्होंने एक ऑनलाइन ऐपण प्रतियोगिता का भी आयोजन करवाया था। जिसमें 200 से ज्यादा लोगों ने प्रतिभाग किया जिसमें से 30 लोगों को पुरस्कृत किया गया,मीनाक्षी खाती ऐपण बनाने के साथ ही युवाओं को इसका प्रशिक्षण भी देती है। जिससे कि उत्तराखंड की लोक कला को संरक्षित किया जा सके। इनके ऐपण के प्रति इस

बेहतरीन समर्पण को देखते हुए उन्हें राज्य स्तर पर 'महिलामातृशक्ति' सम्मान से नवाजा गया है। तथा उत्तराखंड पर्यटन विभाग के सहयोग से उनके ऐपण को राज्य स्तर पर प्रदर्शित किया गया।

'हेमलता कबड़वाल' उर्फ हिमानी जो नैनीताल जनपद के सतोली नामक गांव में निवास करती हैं। अपने हाथ में रंगव ब्रश थामे उत्तराखंड की पारंपरिक चित्रकला का भविष्य संवारने का काम कर रही है। हेमलता ऐपण व अन्य राज्यों के सम्मिश्रण से कलाकृतियां बनाती हैं। वैसे तो ऐपण में केवल दो रंगों लाल व सफेद का प्रयोग किया जाता है, लेकिन यह अपने ऐपण में नीला, पीला, हरा आदि रंगों का प्रयोग कर ऐपण को बनाने का काम कर रही है।

'निशा पुनेठा' उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल के पिथौरागढ़ जिले में निवास करती। यह भी उत्तराखंड की पारंपरिक लोक कला को नए मुकाम पर पहुंचाने का काम कर रही है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा जी.जी.आई.सी. पिथौरागढ़ से हुई। पेंटिंग के शौक के चलते उन्होंने अपने उच्च शिक्षा चित्रकला विषय सेसोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा से किया। पेंटिंग का शौक निशा को बचपन से ही था। जब वह अपने पिता को विभिन्न मौके पर ऐपण बनाते देखती थी, तो वह भी अपने पिता के बनाए ऐपण में लाइन दिया करती। उनके पिता स्वर्गीय जगदीश चंद्र पुनेठा एक अच्छे ऐपण आर्टिस्ट थे। निशा की दीदी ने उन्हें इस बात का एहसास कराया कि उनके द्वारा बनाए ऐपण खास है। एक बार उनके चाचा ने उनसे कपड़े पर ऐपण बनाने का सुझाव दिया कपड़े पर बनाएं ऐपण का सौंदर्य बहुत अच्छा बन पड़ा। इसके बाद निशा ने विभिन्न माध्यमों में ऐपण बनाना शुरु कर दिया। उनकी माता गंगा पुनेठा जोकि जी.जी.आई.सी पिथौरागढ़ में कार्यरत है, ने हमेशा निशा को प्रेरित व प्रोत्साहित किया। निशा ऐपण बनाने के साथ-साथ बच्चों को वर्कशॉप लगा कर इसकी ट्रेनिंग भी दिया करती हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि आजकल की पीढ़ी लोक संस्कृति पर ध्यान नहीं दे रही है लेकिन कई ऐसे युवा भी हैं, जो लोक कलाओं और संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम भी कर रहे हैं। उन्हीं में से एक है 'उर्वशी पांडे' जोकि कौसानी की रहने वाली हैं। उर्वशी डी.एस.बी. परिसर नैनीताल से बी.एस.सी. की पढ़ाई कर रही है। उर्वशी पांडे एक अच्छी ऐपण कलाकार है, और विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा ले चुकी है। उर्वशी कहती है, कि आने वाली पीढ़ी इस कला को ना भूले इसीलिए हमें इसके प्रचार-प्रसार के बारे में सोच विचार करना अति आवश्यक है। उर्वशी पांडे फेसबुक व इंस्टाग्राम के माध्यम से भीऐपण की कलाकारी को लोगों के समक्ष

प्रस्तुत करतीहैं। तथा इनसे उन्हें कई आर्डर भी प्राप्त हुए हैं। हाल ही के कुछ साल पहले सर्किट हाउस अल्मोड़ा में उर्वशी के द्वारा ऐपण का स्टॉल लगाया गया था,जहां पर मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत भी पहुंचे थे। रावत जी ने अन्य प्रतिभाओं के साथ उर्वशी पांडे को भी सर्टिफिकेट दिया था। इसके अलावा सी.एम. ने उर्वशी पांडे के हुनर और उनकी सोच को सलाम करते हुए उनकी काफी तारीफें की थी।

निष्कर्ष

आधुनिकता के इस दौर में आज जहां लोग अपनी परंपरा व संस्कृति को भूल रहे हैं, वहीं उत्तराखंड की कुछ महिला कलाकार इन्हें बढ़ावा व देश-विदेश में पहचान दिलाने का काम कर रहे हैं। यह कलाकार ऐपण को नए- नए तरीके से नई-नई माध्यमों में बनाकर इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने का काम कर रहे हैं।आजकल ऐपण के प्लास्टिक स्टीकर के नए चलन की भी शुरुआत हो चुकी है।इस तरह ऐपण बनाने की मेहनत और दक्षता से भी छुटकारा मिल जाता है।ऐपण बनाने के माध्यम भले ही बदल गए हैं। नए तरीकों से बनने लगे हैं। लेकिन ऐपण के जो डिजाइन हैं,वह प्राचीन काल से लेकर अब तक बनते आ रहे हैं,जैसे-लक्ष्मी पद चिन्ह,स्वास्तिक,शंख, पुष्प आदि। आधुनिकता के साथ ही सही लेकिन आज भी हम अपनी लोक कला से जुड़े हुए हैं, क्योंकि कलाकारों द्वारा ऐपण को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया जा रहा है। जिसके कारण यह कला आज भी हमारे समाज में हमारे समक्ष व्याप्त हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- जोशी,श. च. **2005.** कला के सिद्धांत एवं चित्रकला के रंग, अल्मोड़ा बुक डिपो,अल्मोड़ा, पृष्ठ संख्या 39- 40
2- प्रताप,र. **2017.**चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. पृष्ठ संख्या 282
3- **Kahaniguru. 2021.** https://kahaniguru.com/in/aipan-folk-art-of-uttarakhand-hindi/amp/
4- **Mediandia. 2021.** https://mediandia.eu/culture/the-tradition-of-aipan
5- **Newpost. 2021.** https://www.newspost.live/en/breathing-newlife-into-aipan
6- **Himalayalovers. 2021.** https://himalayalovers.com/story-of-aipan-girlmeenakshi-khati-aipanart
7- **Kafaltree. 2021.** Kafaltree.com
8- **Haldwanilive. 2021.** https://haldwanilive.com/uttarakhand-news-kausanis-aipan-artist-urvashi-pandey-awarded-the-certificate-by-cm-rawat/